

हिंदी पदें

पद १४९

(राग: भूप. जिल्हा - ताल: धीमा त्रिताल)

जय हो मनोहरनंदन की जय हो ॥ध्रु.॥ मातु-पिता भू धन्य देस
कुल। जहाँ प्रगटी छब मोहन की जय हो ॥१॥ कौन भाग्य और
कौन सुकृत, जिन आस कथा रस श्रवणन की जय हो ॥२॥ जिन
प्रताप इह विश्व रचा है। सुखनिधान उन नयनन की जय हो ॥३॥
जो श्रीप्रभु मत सकल उधारन। नाम रटत उन भक्तन की जय
हो ॥४॥ मनोहरानुज कहत सुनियो प्रभु। राखो लाज हम पतितन
की जय हो ॥५॥